लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

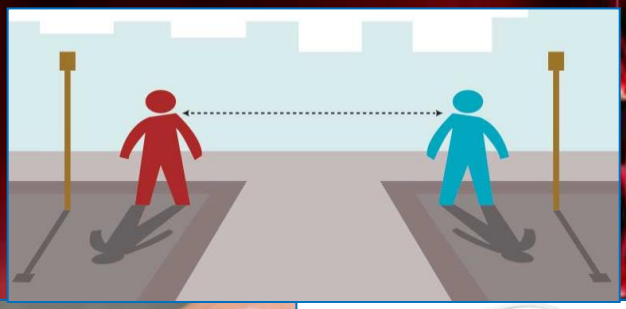

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695 001

..... टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए .....

..... मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए .....

..... शब्दों के लिए अटकिए नहीं .....

..... अशुद्धियों से घबराइए नहीं .....

..... अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए .....

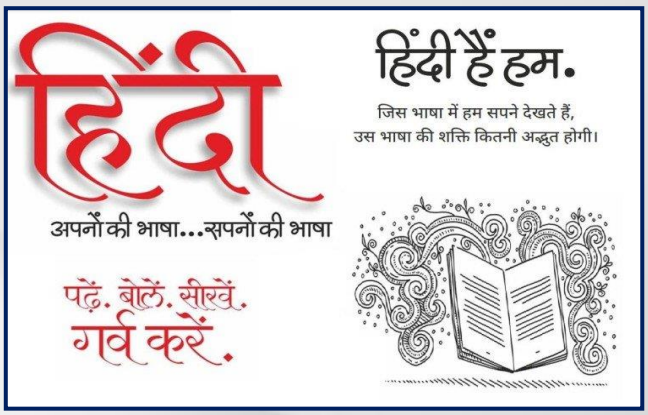

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(27वां अंक)

(01 अप्रैल, 2020 से 30 सितंबर, 2020 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम - 695001

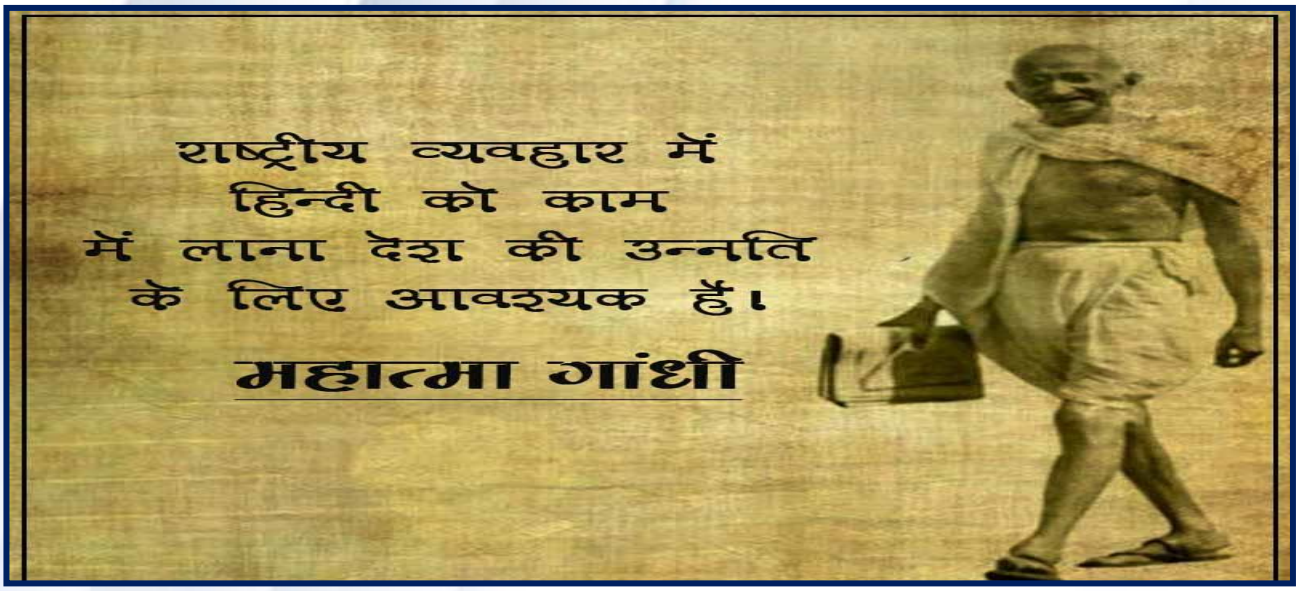
राष्ट्रीय व्यवहार में
हिन्दी को काम
में लाना देश की उन्नति
के लिए आवश्यक हैं।
महात्मा गांधी

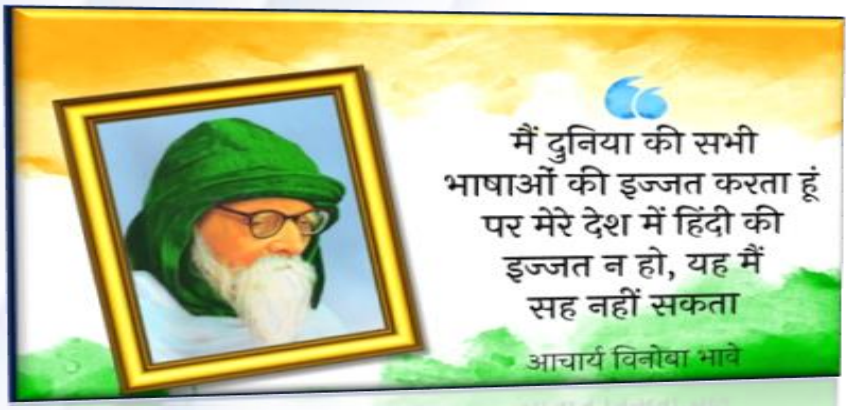
मैं दुनिया की सभी
भाषाओं की इज्जत करता हूं
पर मेरे देश में हिंदी की
इज्जत न हो, यह मैं
सह नहीं सकता
आचार्य विनोबा भावे

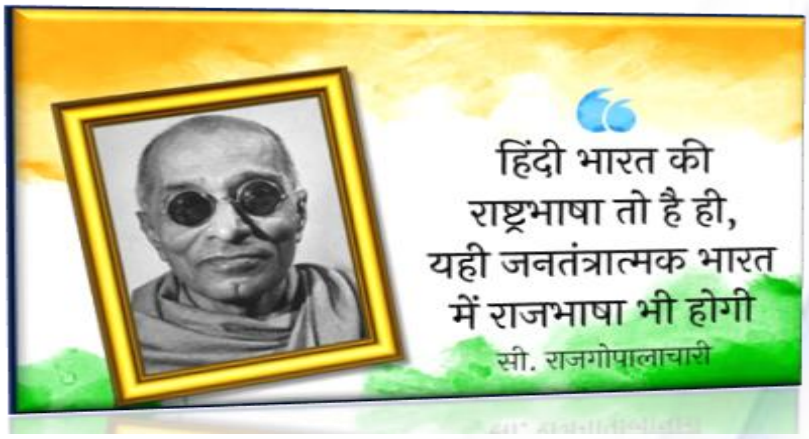
हिंदी भारत की
राष्ट्रभाषा तो है ही,
यही जनतंत्रात्मक भारत
में राजभाषा भी होगी
सी. राजगोपालाचारी

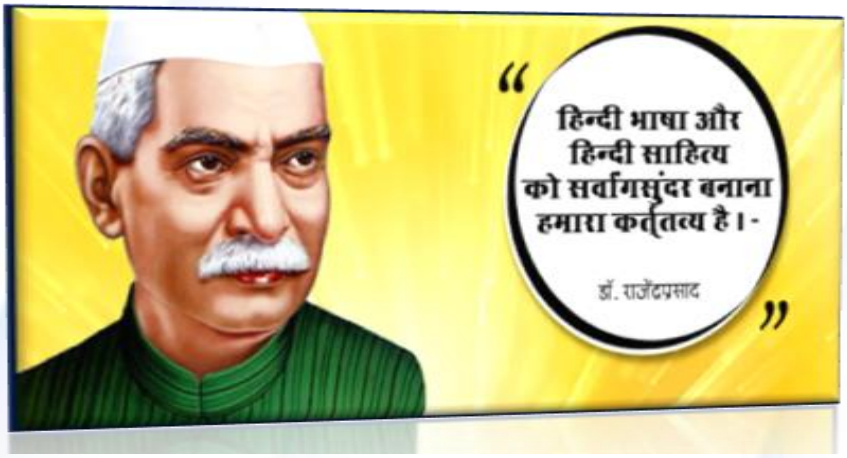
हिन्दी भाषा और
हिन्दी साहित्य
को सर्वांगसुंदर बनाना
हमारा कर्तव्य है। -
डॉ. राजेंद्रप्रसाद

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बीजु जोसफ
उप महालेखाकार

श्री एम ए राजन
उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री बिजु पी सी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

श्रीमती एस संध्या
हिंदी अधिकारी

श्रीमती गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री प्रतीक कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री प्रभात रंजन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री रीनु गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	हिंदी दिवस 2020 के अवसर पर भारत के माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	
2.	संरक्षक की कलम से.....	
3.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
4.	संपादक मंड़ल की ओर से.....	
5.	प्रयास	प्रभात रंजन, कनिष्ठ अनुवादक
6.	हिंदी के विख्यात साहित्यकार एवं उनकी रचनाएं	
7.	ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान	रोज़ अली, डेटा एंट्री ऑपरेटर
8.	ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान	के शांति, सहायक लेखा अधिकारी
9.	बारिश - कुछ घरेलू नुस्खे	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
10.	कीमती समय	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
11.	सेहत और सुंदरता के सीक्रेट्स	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
12.	इम्यूनिटी बूस्टर्स होते हैं मीठे दोस्त	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
13.	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2020 की रिपोर्ट	
14.	हिंदी में प्रथम रचना, कवि आदि	निधिलक्ष्मी, वरिष्ठ अनुवादक
15.	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	अपर्णा सरस्वति
16.	सुविचार	एल प्रभा, सहायक लेखा अधिकारी
17.	आपकी प्रतिक्रिया	
18.	सेवानिवृत्ति	

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

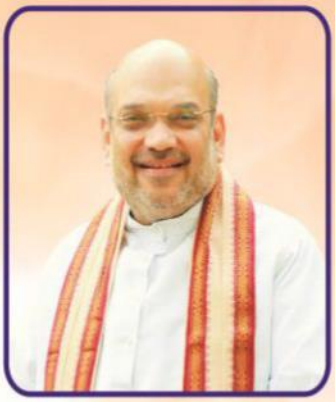

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

संरक्षक की कलम से.....

प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 27वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। कोविड़-19 वैश्विक महामारी से उत्पन्न विषम परिस्थितियों के कारण राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों में कई परिवर्तन आए हैं। अब कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, विभिन्न हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिंदी कार्यशालाएं, हिंदी पखवाड़ा समारोह आदि ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए जा रहे हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल होने के बावजूद हमने कार्यालय में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन पूर्व की भांति सुनिश्चित किया है। आशा है कि भविष्य में भी भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सफल एवं सक्षम रूप से आगे बढ़ें।

"श्रुति" के 27वें अंक का प्रकाशन सफल बनाने में अपना योगदान देनेवाले कर्मचारियों/ अधिकारियों को और पत्रिका के संपादक मंडल को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

आशा है कि पत्रिका "श्रुति" राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के मार्ग पर अग्रणी रहे । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुधर्मिनीजी

तिरुवनंतपुरम

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक की कलम से.....

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 27वां ई-संस्करण प्रकाशित किया जाना हमारे लिए असीम गौरव और खुशी की बात है । हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति विशेष रुचि है और इसी के फलस्वरूप हमारा कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है । इसका संपूर्ण श्रेय हमारे अधिकारियों/कर्मचारियों को है । मेरी यही कामना है कि आने वाले वर्षों में भी हमारा कार्यालय राजभाषा के प्रति अपनी भूमिका को सफल रूप से निभाता रहे । राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार एवं प्रयोग में हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रेरणा देने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने में यह पत्रिका अहम भूमिका निभाएगी । मैं पत्रिका के संपादक मंडल को, रचनाकारों को और पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देनेवाले सभी को धन्यवाद देता हूँ ।

पत्रिका "श्रुति" की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

एन वी मात्तच्चन

तिरुवनंतपुरम

(एन वी मात्तच्चन)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल की ओर से.....

आज समूची दुनिया कोविड-19 नामक महामारी की चपेट में है। महामारियाँ तो पहले भी आती रही है और मनुष्य अपना बचाव करने में सफल भी होता रहा है। आशा है, इस बार भी मनुष्य की जीत और कोरोना की हार होगी।

हमारे कार्यालय की ई पत्रिका "श्रुति" के 27वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी के प्रति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है। हिंदी भाषा व साहित्य में रुचि रखनेवाले सहृदयों के सहयोग के कारण ही हिंदीतर क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद इस पत्रिका का प्रकाशन करने में हम समर्थ हुए हैं। हमारे इस ध्येय में सभी उच्च अधिकारीगण का प्रोत्साहन और प्रेरणा भी हमें मिल रही है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है - "एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ"। हिंदी ही वह भारती बन सकती है। हिंदी भारतीयता की पहचान है। आज हिंदी संघ सरकार की राजभाषा के पद पर विराजमान है। उस पद की गरिमा बनाए रखना हर भारतीय का दायित्व है। कवि की तरह हम भी यह कामना करतें हैं कि हिंदी हमेशा भारत-भारती होकर विराजती रहें।

"श्रुति" में प्रकाशन के लिए रचनाएं देनेवाले सभी रचनाकारों के प्रति हम आभारी हैं। उनके योगदान के बिना "श्रुति" का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। हमारी यह पत्रिका पढ़कर अपने बहुमूल्य सुझाव भेजकर हमें अनुग्रहीत करनेवाले "श्रुति" के माननीय पाठक गण हमेशा हमारे प्रेरणास्रोत रहे हैं। आप सबको शत्-शत् धन्यवाद। भविष्य में भी आपके बहमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन की हमें प्रतीक्षा रहेगी। कृपया अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं।

आशा है कि "श्रुति" का यह अंक आपको पसंद आएगा।

जय राजभाषा! जय हिंद!

संपादक मंडल

प्रयास

प्रभात रंजन

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

ना हो निराश, तू कर प्रयास

कि एक दिन तेरा मुकाम आएगा।

तू बढ़ चल इन मुश्किलों को पार कर

कि एक दिन मंजिल पर तेरा नाम आएगा।

तू सह ले आज इन संघर्षों की धूप

कि एक दिन तेरी सफलता का छांव आएगा।

तू कर हर संभव कोशिश और भरोसा रख अपने पंखों पर

कि एक दिन तेरी उड़ान की जद़ में ये पूरा आसमां आएगा।

ना हो निराश, तू कर प्रयास

कि एक दिन तेरा मुकाम आएगा।

हिंदी के विख्यात साहित्यकार एवं उनकी रचनाएं

(राजभाषा विभाग की वेबसाइट से संकलित)

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

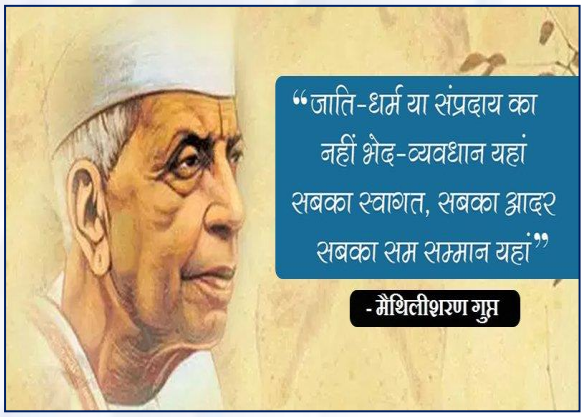

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी काव्य के निर्माता थे । राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नवजागरण ने हमारी संस्कृति, इतिहास और साहित्य में विश्वास का जो स्वर उत्पन्न किया था,उसकी अधिकाधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति, सबसे पहले मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में ही हुई । उनका जन्म 03 अगस्त, 1886 को चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश में एक संभ्रांत वैश्य कुल के कनकने परिवार में हुआ था ।

आरंभिक शिक्षा झांसी के राजकीय विद्यालय में हुई । किंतु उसमें कवि का मन नहीं रमा और अंततः घर पर ही उन्होंने संस्कृत-हिंदी तथा बंगला का व्यापक स्वाध्याय किया । एक बार मैथिलीशरण ने कहा था, "मैं क्यों पढाई करूंगा ? पढने के लिए पैदा नहीं हुआ हूँ । लोग-बाग मुझे पढ़ेंगे ।" बचपन में कही उनकी यह बात आगे चलकर सही साबित हुई ।

मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्होंने 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में कविता रचना आरंभ की ।

महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी तथा अज्ञेय जी ने मुक्त मन से स्वीकार किया कि उन्होंने खड़ी बोली काव्य के संस्कार मैथिलीशरण गुप्त से ही लिए हैं और उन्हें अपना काव्य गुरु मानते थे ।

प्रमुख रचनाएँ

मौलिक काव्य रचनाएँ - साकेत, रंग में भंग, जयद्रथ वध, पद्य प्रबंध, भारत- भारती, शकुंतला, किसान, पत्रावली, वैतालिक, पंचवटी, स्वदेश संगीत, हिंदु,त्रिपथगा, शक्ति ।

गीतिनाट्य - तिलोत्तमा, चंद्रहास, अनघ, गृहस्थ-गीता ।

संस्मरण - मुंशी अजमेरी ।

श्रद्धांजलि संस्मरण - शब्द चित्र ।

अनूदित कृतियां - स्वप्नवासवदत्ता, विरहिणी बृजांगना, पलासी का युद्ध, गीतामृत, वीरांगना ।

संस्मरण एवं आत्मकथा - गणेशाजी, आचार्यदेव, अनुज, श्रद्धांजलि, हमारा वृंदावन ।

निबंध एवं समालोचना - हिंदी कविता किस ढंग की हो, बृजनंद सहाय के उपन्यास ।

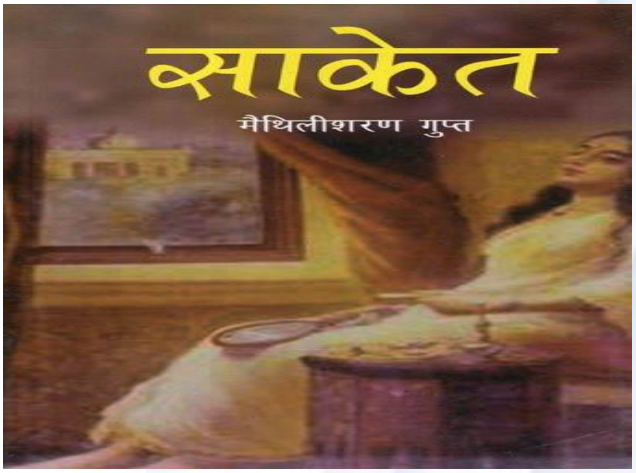

भवानीप्रसाद मिश्र

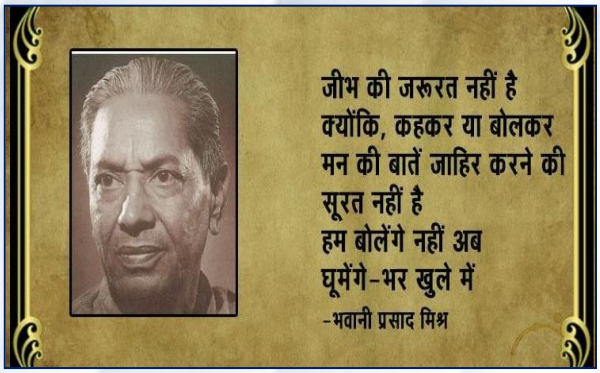

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने शब्दों को ही सार्वजनिक ताकत माना है। उनका मानना था कि "शब्दकार को अगर जरूरत पड़े तो उसे अपने शब्दों पर मरना चाहिए"। बोलचाल की भाषा को कविता में साधकर उन्होंने सजहता और संप्रेषणीयता का नया प्रतिमान गढ़ा। उनकी भरसक कोशिश यही रही कि दर्शन में अद्वैत और तकनीकी में सहज लक्ष्य ही उनके बन जाएं। अपनी रचनाधर्मिता के तहत मिश्र जी कभी प्रकृति के सौंदर्य के गायक बनकर उभरते हैं, कभी अनास्था के बीच आस्था का दीपक जलाते हैं, कभी चेतना के नये स्वरों को उद्घाटित करते हैं तो कभी चिंतन के नए आयामों को छूते हैं। उन्होंने गांधीवाद को कविता की अंतर्धारा के बीच से उपजाया। प्रेम, करुणा, अहिंसा, सर्वोदय जैसे मूल्य उनकी कविताओं ने स्थापित किए।

प्रमुख रचनाएं – गीतफरोश, अंधेरी कविताएँ, गाँधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, इदं न मम, शरीर कविता फसलें व फूल, मानसरोवर दिल तथा तूस की आग।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय"

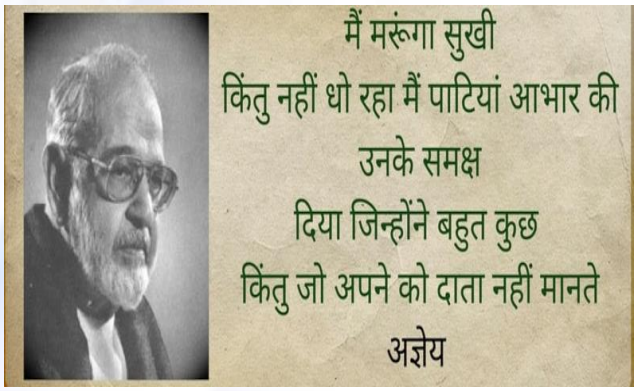

अज्ञेय 20वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य के नवोदय के सूत्रधार हैं। कवि और गद्यकार दोनों ही रूपों में उन्होंने नयी दिशाओं का आविष्कार और परिष्कार किया। उन्होंने कविता को छायावादी अतिशय भावुकता और प्रगतिवाद एकांगी मानसिकता से अलग कर एक नई काव्य भूमि की ओर ले जाने का बीड़ा उठाया। "अज्ञेय" स्वभाव से विद्रोही थे। उन्होंने अपने जीवन को अपने ढंग से, जगह बदल-बदल कर तरह-तरह से जाना और जीया। इससे उत्पन्न परितोष को कविता में उन्होंने इस तरह व्यक्त किया- "मैं मरूंगा सुखी/क्योंकि तुमने जो जीवन दिया था/उससे मैं निर्विकल्प खेला हूं/ खुले हाथों से मैंने उसे वारा है/मैं मरूंगा सुखी/मैंने जीवन की धज्जियाँ उडाई हैं।" अज्ञेय जी के लेखन के केंद्र में निहित व्यक्ति मुक्त है, मूल्य सर्जक है और जिम्मेदारी के एहसास से भरा हुआ भी। दूसरे तक मूल्यबोध को पहुँचाना अज्ञेय साहित्यकार का दायित्व मानते हैं। यही उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता है।

प्रमुख रचनाएँ - कितनी नावों में कितनी बार, भग्नदूत, चिंता, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, विपथगा, परंपरा, नदी के द्वीप, सबरंग और कुछ राग, लिखा कागद कोरे तथा आलवाल।

महादेवी वर्मा

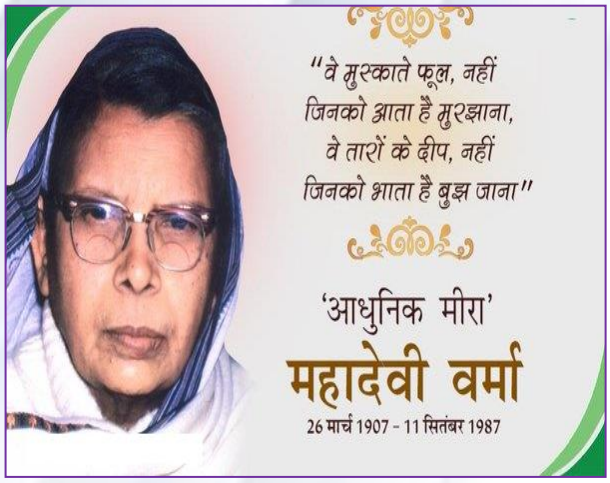

आधुनिक हिंदी कविता में महादेवी वर्मा एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरीं। उन्होंने अपनी भाषा खड़ीबोली हिंदी को संवेदनशील ग्राहिका के रूप में उपस्थित किया। महादेवी जी में कवि प्रतिभा सात वर्ष की उम्र में ही मुखर हो उठी थी। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताएँ देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी थी। महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ एक विशिष्ट गद्यकार एवं चित्रकार भी थीं। उनकी कविताओं ने वेदना में जन्म लिया और करुणा में आवास पाया। उनका मानना था कि पीड़ा और वेदना का यह संसार नकारात्मक नहीं है। महादेवी वर्मा ने न तो बुद्धि वैभव से पाठकों को आश्चर्य में डाला और न ही ठोस सिद्धातों को मांज-धोकर, चमका-चमका कर कविता में जड़ने की कोशिश की। उनका प्रयास तो केवल जीवन के स्पंदन और गहरे मर्म को उद्घाटित करने का रहा।

प्रमुख रचनाएं - नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, अतीत के चलचित्र, यामा, पथ के साथी, मेरा परिवार।

फणीश्वरनाथ रेणु

आज़ादी के बाद के कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु जी भाव, शैली और "ठेठ देशीयता" का विशिष्ट रंग ढंग लिए अलग धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं। रेणु जी के उपन्यासों में ग्रामीण जन-जीवन की वास्तविक हलचलों, परिवर्तित स्थितियों, टकरावों, तनावों और जटिलताओं तथा विडंबनाओं को जिस प्रकार उजागर किया गया, उससे वे हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के असली वारिस कहे जाने लगे। उन्होंने लिखने की प्रक्रिया में कभी अपने को खोजा तो कभी अपने को खोजने की प्रक्रिया में लिखा। एक कलाकार की हैसियत से उनकी प्रतिबद्धता आम आदमी के प्रति रही। रिपोर्ताज लेखक के रूप में भी रेणु जी ने उल्लेखनीय साहित्य रचा। रेणु जी की कहानियों ने ग्रामीण आंचलिक परिवेश के साथ-साथ शहरी जीवन की विभिन्न स्थितियों को भी अपने वस्तु विन्यास में समेटा। हिंदी सिनेमा के रूपहले पर्दे पर आयी रेणु जी की "तीसरी कसम" कहानी ने उनकी लोकप्रियता को भरपूर उडान दी।

प्रमुख रचनाएँ – मैला आँचल, ठुमरी, एक आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, अच्छे आदमी तथा पल्टू बाबू रोड।

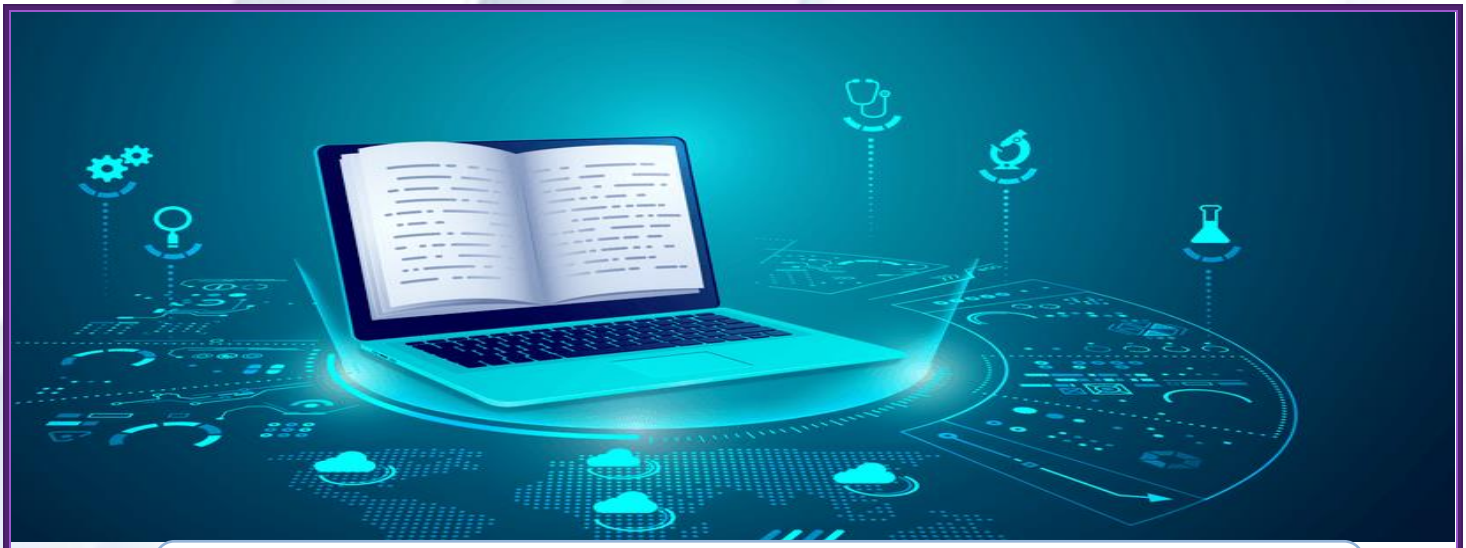

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान

रोज़ अली
डेटा एंट्री ऑपरेटर ग्रेड-1

"एक अशिक्षित व्यक्ति के लिए "A" सिर्फ तीन डंडे हैं।"

शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना और कराना देश के नागरिकों का मूल कर्तव्य और मूल अधिकार है क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति अपनी शिक्षा के बल पर ही देश को और स्वयं को सफलता की नई ऊँचाईयों पर लेकर जा सकता है। क्योंकि –

"शिक्षा में सबसे ज़्यादा ताकत होती है जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है।" –
नेल्सन मंडेला

वर्तमान परिदृश्य, भूतकाल के परिदृश्य से सर्वथा भिन्न हैं। तकनीकि और संचार का विकास इस स्तर तक हो गया है कि शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र शेष रह गया हो जहाँ तकनीकी-प्रौद्योगिकी और संचार तकनीक का उपयोग न किया जा रहा हो। शिक्षा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा हैं। वर्तमान शिक्षा क्षेत्र पुराने शिक्षा क्षेत्र से तकनीकी और संचार की वजह से पूर्णतः परिवर्तित हो चुका है। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा से आशय यह है कि शिक्षक दूर से और दुनिया के किसी भी कोने में रहकर इंटरनेट का प्रयोग कर संवाद कर सकता है। इस ऑनलाइन शिक्षा का महत्व इसलिए भी तेज़ी से विकसित हो रहा है क्योंकि वर्तमान कोरोना महामारी के चलते शिक्षण संस्थाओं में ऑफलाइन माध्यम से शिक्षा मुहैया कराना मुश्किल हो रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी के पास कुछ मूलभूत उपकरण और सेवा उपलब्ध होनी चाहिए जैसे कि- मोबाइल और लैपटॉप और तीव्रगति का इंटरनेट। किंतु उपयुक्त नियम-कानून न होने की वजह से ऑनलाइन शिक्षा का व्यापक उपयोग नहीं हो पा रहा है क्योंकि - **"शिक्षा का मतलब सिर्फ स्कूल जाना और डिग्री हासिल करना नहीं है बल्कि अपने ज्ञान को बढ़ाना और जीवन की सच्चाई को आत्मसात करना है।"**

जैसे कि हर सिक्के के दो पहलू होतें है वैसे ही ऑनलाइन शिक्षा के फायदे होने के साथ-साथ कुछ नुकसान भी है।

सबसे पहले फायदों की बात करते हैं-

(1) शिक्षा और शिक्षक तक आसान पहुँच :

जैसा कि हम सब जानते हैं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति शहरी शिक्षा के अपेक्षाकृत इतनी विकसित नहीं हो पाई है। ग्रामीण क्षेत्र की कई प्रकार की मूलभूत जरूरतों जैसे- बिजली, सड़क, और संचार सेवाओं जैसे वाई-फाई और इंटरनेट की आसान पहुँच नहीं है। इसलिए ग्रामीण परिदृश्य पिछड़ जाता है हर एक मामले में और जहाँ तक रही बात शिक्षा की तो प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है, जिससे विद्यार्थी गांव छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। पर यदि ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ मूलभूत सुविधाएँ मुहैया कराकर और साथ ही छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा के बारे में सचेत करके इस समस्या से निपटा जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि जो छात्र/छात्रा आर्थिक स्थिति या पारिवारिक समस्याओं की वजह से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते हैं उनके लिए यह एक वरदान साबित हो सकता है। क्योंकि वह अपने घर पर रहकर भी पढ़ाई कर सकते हैं। शिक्षकों से संवाद कर सकते हैं।

इस ऑनलाइन शिक्षा से एक फायदा यह भी है कि विदेशी शिक्षा को भी ऑनलाइन/ इंटरनेट के माध्यम से सीखा जा सकता है।

(2) समय-पैसे की बचत :

इस ऑनलाइन शिक्षा माध्यम का एक फायदा अध्यापक को भी होता है। ऐसे शिक्षक जो कई किलोमीटर दूर से पढ़ाने आते हैं वह इस माध्यम का प्रयोग कर घर से भी पढ़ा सकते हैं जिससे समय और यात्रा-खर्च दोनों की बचत होगी। वह उस समय और पैसे का सदुपयोग अपनी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कर सकता है। वह अपनी पढ़ाई में ग्राफिक्स का प्रयोग कर पढ़ाई को और भी मनोरंजक बना सकता है। क्योंकि चलचित्र या ग्राफिक्स के माध्यम से पढ़ाई करने पर बच्चे जल्दी सीखते हैं बजाए इसके कि वे सिर्फ किताब ही पढ़े। और साथ ही वह अध्यापक - **"बच्चों को सिर्फ यह ही न सिखाए कि सोचना क्या है बल्कि यह भी सिखाए कि सोचना कैसे है।"**

अब कुछ नुक्सान की बात करते हैं –

(1) शिक्षा का एकतरफ़ा संवाद :

कभी-कभी शिक्षक कुछ इस तरह से वीडियो बनाते है जिसमें सिर्फ शिक्षक की आवाज़ पहुँच पाती है, छात्रों/ विद्यार्थियों की नहीं जिससे सिर्फ छात्र वहीं पढ़ पाता है जो अध्यापक पढ़ा रहा होता है, दोहरा संवाद न होने की स्थिति में छात्रों को कॉन्सेप्ट क्लियर नहीं हो पाता यदि कोई संदेह हो तो।

(2) बच्चों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन :

सामान्यतः ऑफलाइन शिक्षा माध्यम में विद्यार्थी/छात्र की दिनचर्या अलग होती है, जैसे कि सुबह जल्दी उठना, यदि शिक्षण संस्थान पास में हो तो कुछ दूर पैदल चलना, पहुँचकर मित्रों के साथ समय व्यतीत करना जिससे उनमें सामाजिक भावना का विकास होता है। पर ऑनलाइन शिक्षा माध्यम में दिनचर्या बिलकुल अलग हो जाती है। देर तक एक जगह पर बैठने से बीमारियाँ घर करने लगती है। आँखों पर असर पड़ने लगता है और साथ ही वह सामाजिक गतिविधियों से भी अलग होने लगते हैं। साथ ही साथ ऑफलाइन शिक्षा माध्यम से बच्चों का सही से मूल्यांकन नहीं हो पाता क्योंकि यदि पेपर या परीक्षा ली जाती है तो नकल करने की मंशा बढ़ जाती है। जिससे उसमें अनुशासनहीनता और आत्म मूल्यांकन की कमी आ जाती है, जिसका विद्यार्थी जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रतिस्पर्धा की भावना भी पूर्णतः विकसित नहीं हो पाती है। क्योंकि तब विद्यार्थियों में उत्साह की कमी आने लगती है, वह सोचता है-

"अरे अभी कुछ और कर लेता हूँ बाद में इसे देख लूँगा या सुन लूँगा।"

(3) व्यावहारिक शिक्षा का अभाव :

ऑनलाइन शिक्षा का एक सबसे बड़ा नुकसान यह भी है कि इसमें विद्यार्थी को व्यावहारिक शिक्षा नहीं मिल पाती है जबकि कहा जाता है कि किसी काम को अगर सीखा हो तो आप उसका व्यावहारिक प्रयोग करो न कि सिर्फ पढ़ो।

(4) संचार व्यवस्था :

वैसे तो ऑनलाइन शिक्षा माध्यम बहुत हद तक अच्छा है किंतु सिर्फ संचार व्यवस्था के वहनीय और तीव्र न होने पर यह कॉन्सेप्ट कभी सफल नहीं हो सकता है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा में सभी पहलू मौजूद है। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि इस माध्यम ने शिक्षण संस्थाओं और बच्चों की शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में खास मदद की है।

यह माध्यम उन लोगों के लिए बढ़िया विकल्प है जो काम करते हुए या घर पर रहते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं।

विद्यार्थी की जरूरत है कि वह मन लगाकर पढ़े और समय का सदुपयोग करें और जो सभी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं उन्हें मुफ्त में शिक्षा देने की योजना बनानी चाहिए जिससे ग्रामीण या शहरी परिवेश का कोई भी शिक्षा ग्रहण करने में पीछे न रहे और न ही वंचित हो। क्योंकि – **"हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शांति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।"**

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध)

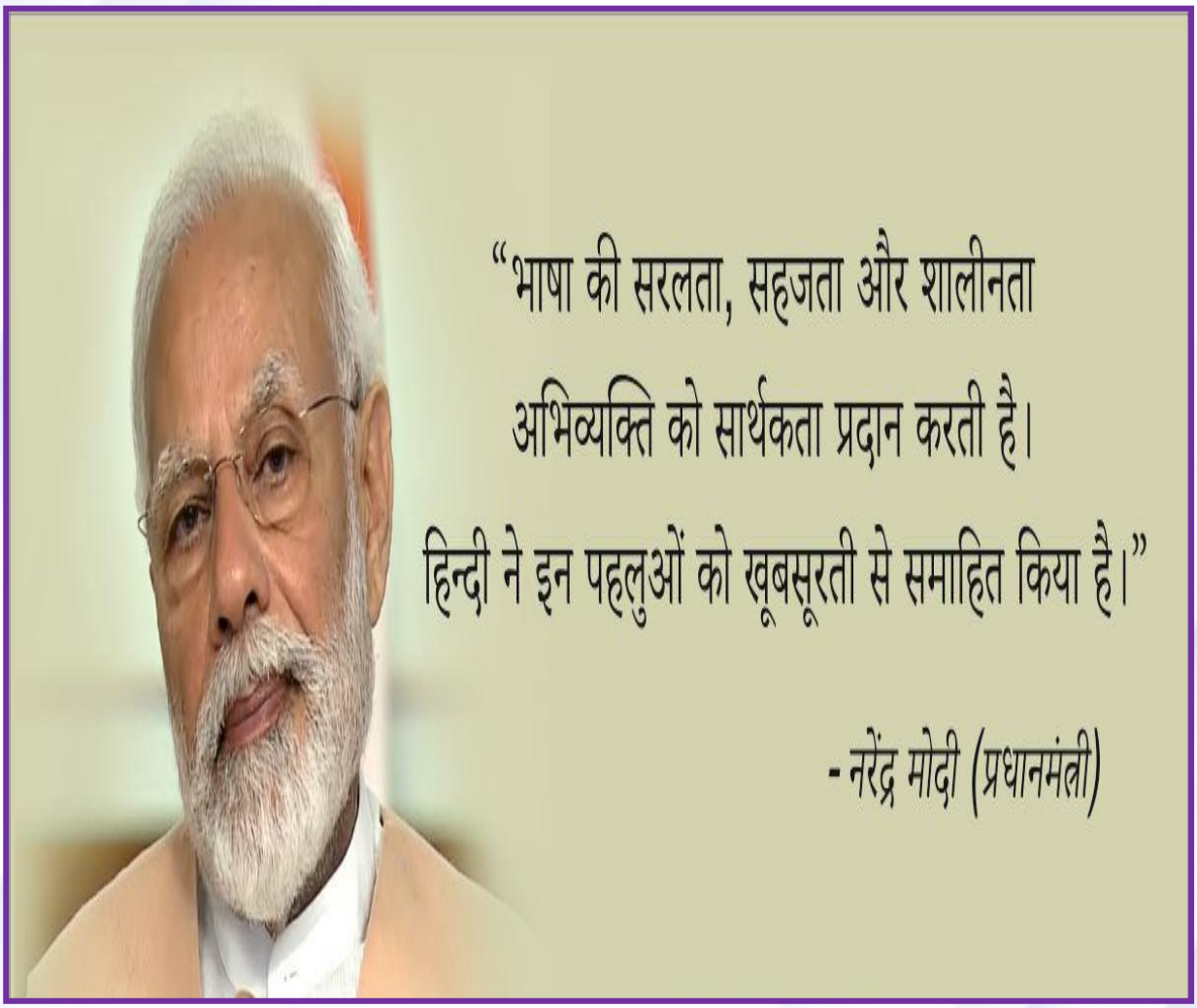

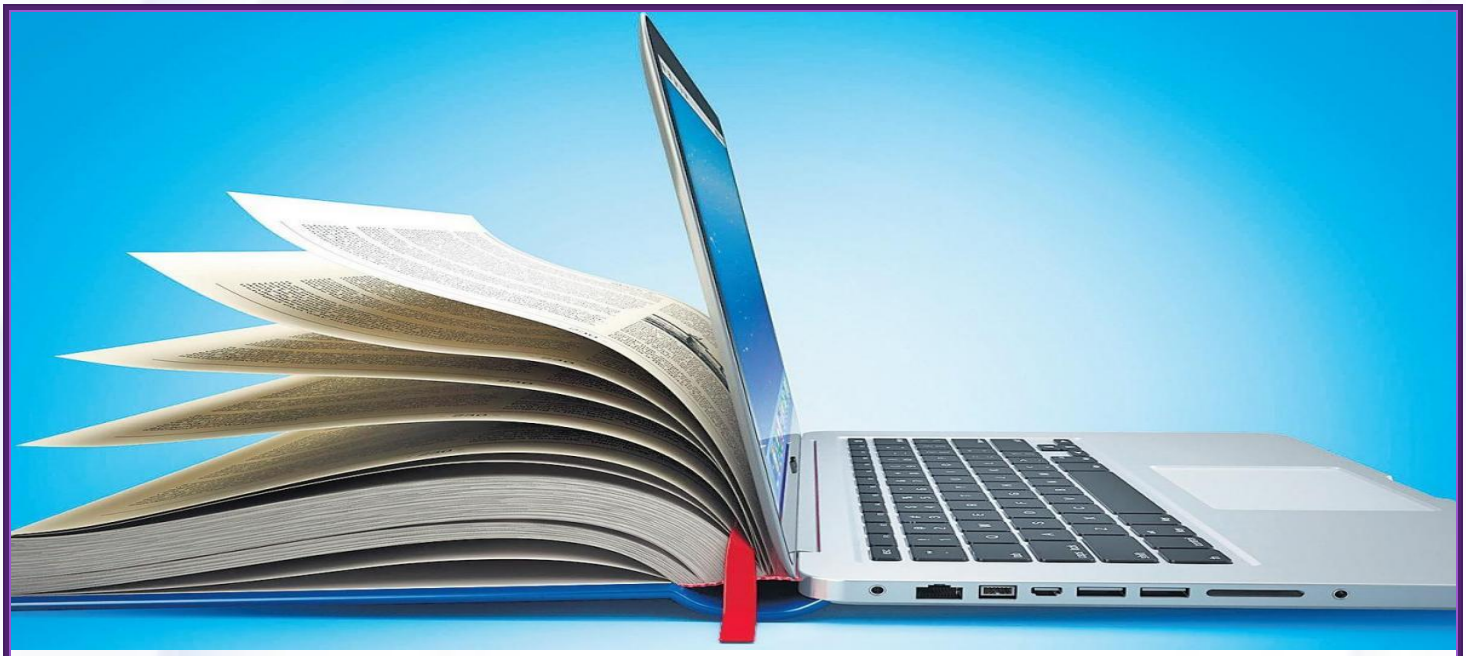

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान

शांति के
सहायक लेखा अधिकारी

विज्ञान आज विश्व भर में तरक्की कर चुका है। वैज्ञानिक और तकनीकी तरीके अपनाकर आज मनुष्य का जीवन बहुत ही सुगम हो गया है। आज विश्व की इस दुर्गम अवस्था में जब लोग कोरोना वायरस के शिकार होते जा रहे हैं जो कि इतनी तेज़ी से फैल रहा है, सब घर में ही सुरक्षित रहना चाहते हैं। तभी ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था का प्रचार और महत्व अब बढ़ चुका है। कोरोना जैसे महामारी से बचने के लिए लोग घर बैठे-बैठे सामाजिक माध्यम के ज़रिए अपने ऑफिस का काम कर रहे है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के बहुत फायदे हैं। बच्चे घर में ही रहकर मोबाइल, कंप्यूटर या अन्य माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते है, अपने शिक्षक से संवाद कर सकते हैं और संदेह निवारण भी हो जाता है। भाग-दौड़ की इस ज़िंदगी में बच्चे घर में रहकर, घर का पौष्टिक खाना खाकर स्वस्थ रह सकते हैं और विद्या का अध्ययन भी कर सकते हैं। स्कूल जाने के लिए न तैयार होने की झंझट, न बस छूटने की फिक्र। बच्चे ऑनलाइन शिक्षा के बाद के समय का सदुपयोग कर सकते हैं। अपनी इच्छा से अपनी पसंद का काम करने का अवसर मिलता है। उन्हें न स्कूल से लौटने की थकान, न स्कूल बैग का भारी वज़न उठाने की दिक्कत, न ट्यूशन जाने की टेंशन। बच्चे स्वस्थ रहते हैं। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से ऑनलाइन शिक्षा के लिए तैयार रहते हैं। लॉकडाउन की वज़ह से जब लोगों को इधर-उधर जाने की पाबंदी है, वह जहाँ भी है, तकनीकी माध्यमों के सहारे अपने घर की चार दिवारी के अंदर रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है। पढ़ाई के

साथ-साथ बच्चे अपनी रुचि के अनुसार अपनी कामना विकसित कर सकते हैं। स्कूल के बाद पढ़ाई करने का भी वक्त मिलता है।

लेकिन भारत के कई लोग हैं जो इन सामाजिक माध्यमों से अनजान है या जिनके पास इनकी सुविधा नहीं है। जैसे आदिवासी बच्चे बहुत दूर चलकर स्कूल पहुँचते है, इन बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था नहीं है और यह उनके लिए एक शाप है। बहुत देर तक इन माध्यमों के उपयोग से बच्चों की आँखें थक जाती है जिससे आँखें कमज़ोर हो जाती है। स्कूल की विधि, अनुशासन, नियम और व्यवस्था नष्ट हो जाती है। समय पर उठने और सोने की आदत भी नहीं रह जाती है। जिन अध्यापकों की काफी उम्र हो चुकी है, और जो इस नयी व्यवस्था से अनजान है, उनके लिए इस ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था को अपनाने में बहुत दिक्कत होती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आपस की बातचीत, वाद-विवाद, अपनी भावनाओं को प्रकट करने से ही उनका मानसिक विकास होता है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था से बच्चों की आपसी मित्रता, संवाद, लड़ाई-झगड़े, नटखट बातें, भोली करतूतें सब कम होती है, जिसका उनके स्वभाव और व्यक्तिगत रिश्तों पर गहरा असर पड़ता है। घर में बैठे-बैठे शिक्षा के साथ-साथ अन्य दूषित जानकारी भी इन माध्यमों से मिलती है, जो उन्हें बुरी तरह प्रभावित करती हैं। बच्चे अब खेलने के लिए बाहर नहीं जाते, घर बैठे आलसी हो जाते हैं। खेल-कूद के बिना शारीरिक व्यायाम भी नहीं होता और वे मोटे हो जाते हैं। इसी तरह ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के बहुत सारे दोष होते हैं। शारिरिक और मानसिक विकास से एक मनुष्य का पूरा विकास होता है। घर का माहौल भी बच्चे की इस व्यवस्था को प्रभावित करता है , तनाव भरे घर के माहौल में बच्चे शिक्षा पर ध्यान नहीं दे सकते, घर पर रहने को मजबूर हो जाते हैं, जो उनके व्यवहार को प्रभावित करता है। स्कूल जाते तो कुछ देर के लिए ये बच्चे अपने दोस्तों और अध्यापकों के स्नेह भरे व्यवहार या सहयोग से सब भूल सकते हैं।

हम आशा करते हैं यह कोरोना महामारी का अंत होगा। अगले साल तक इसका इलाज या इसकी वैक्सीन आएगी। तभी बच्चे और सब लोग निस्संदेह बाहर जाएंगे, स्वतंत्रता से विचरण

करेंगें, बच्चे खुशी से अपने दोस्तों से मिलजुलकर, बचपन का आनंद उठाएंगे। बचपन एक व्यक्ति के जीवन में सबसे स्वर्णिम काल होता है, जो चाहने पर भी कभी वापस नहीं लौटता। हम चाहते हैं कि आजकल के बच्चे भी इसका पूरा आनंद उठाएं। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। बच्चे जब पूरी तरह से मानसिक और शारिरिक रूप से विकसित होंगे, तभी हमारे देश का विकास होगा। आज हम ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को लागू करने पर मजबूर है। आशा है कि हमारे बच्चों के लिए एक नया सवेरा होगा जो आनंदमय और सुखदायक होगा।

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध)

बारिश – कुछ घरेलू नुस्खे

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

- *अक्सर बारिश के दिनों में डिब्बे में रखे हुए बिस्कुट सील जाते हैं। उन्हें फ्रिज में रख दीजिए, पुनः करारे हो जाएंगे।*
- *मक्खियों को भगाने के लिए किचन के प्लेटफॉर्म को नमक के पानी से पोंछ दीजिए, मक्खियां एकदम भाग जाएंगी।*
- *आलू के चिप्स बनाते समय खौलते पानी में थोडा सा मीठा सोडा डाल दीजिए, तब चिप्स सफेद व क्रिस्पी बनेंगे।*
- *गर्मियों में दही रात में कितनी भी देर से जमाये खट्टा हो जाता है। आप सुबह दूध को गरम करके उसमे थोड़ा सा दही का जामन लगा दे। 2-3 घंटों में दही खूब अच्छा व मीठा जमेगा। चाहें तो दूध में ही चीनी मिला दें, तो क्या कहने।*
- *दूध के भगौने की तली में अक्सर गाढ़ा-गाढ़ा चिपक जाता है। बर्तन में दूध डालने से पहले ही थोड़ा सा पानी डाल के बर्तन को गोल घुमा लें। इससे दूध नीचे नहीं चिपकेगा।*
- *कई बार कपडों पर तेल के दाग लग जाते हैं। अच्छे से धोने पर भी नहीं जाते हैं। उस पर आयरन कर दीजिए, धब्बे निकल जाते हैं।*

कीमती समय

राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

जब एक बच्चा इस दुनिया में पैदा होता है,
लोग जन्म के समय के बारे में पूछताछ करते हैं,
लेकिन समय चाहे जो भी हो
वे कैसे रहते हैं, सभी फरक पड़ता है।
समय जीवन का सबसे अनमोल खजाना है
और हर सेकेंड जो गुजरता है, वे हमेशा के लिए चला जाता है
खोए हुए समय को कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है
और हम इसे खोल नहीं सकते जैसे कि एक घड़ी।
खतरे में जीवन को बचाने के लिए मिनट मूल्यवान है
और समय बर्बाद करना एक छात्र को विफलता की ओर ले जाता है
लेकिन पैसे के विपरीत, समय बराबर है
अमीर और गरीब दोनों के लिए

इस दुनिया में जहाँ लोग प्रतिस्पर्धा करते हैं

कुछ तेज़ हो सकते है लेकिन कुछ धीमे हो सकते हैं

लेकिन कछुए की तरह जिसने रेज़ जीती

धीमी गति वाला भी दौड़ जीत सकता है।

इस दुनिया में कुछ भी स्थिर नहीं है

बादल और बारिश, धूप और इंद्रधनुष में बदल जाते हैं

और जैसे अच्छे समय बुरे समय में बदल जाता है

बुरा समय भी अच्छे समय में बदल जाता है।

कोई भी विज्ञान नहीं खोज सकता जब हमारा

जीवन समाप्त हो जाता है।

और जब इस दुनिया को छोड़ने का समय आता है

वह समय जो हम विलासिता और प्रसिद्धि के लिए खर्च करते हैं

पानी पर खिंची रेखाओं की तरह होते हैं

लेकिन जो समय हम आसपास के लोगों के लिए खर्च करते हैं

उनके होंठों पर हल्की मुस्कान लाने के लिए

वह कीमती समय हमेशा के लिए रहता है

किसी और के दिल में पोषित यादों के रूप में।

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता में पुरस्कृत कविता)

सेहत और सुंदरता के सीक्रेट्स

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

दिनभर की दिनचर्या में आप घर-परिवार से लेकर ऑफिस तक कई तरह के शारिरिक और मानसिक कार्य करते है। लेकिन रोज़ की दिनचर्या में ही आप कुछ ऐसी चीज़ों को शामिल कर लेते हैं जो आपकी सेहत के साथ-साथ सुंदरता को भी नुकसान पहुंचाती है। इसलिए सेहत और सुंदरता के 5 सीक्रेट्स पर ज़रूर ध्यान दें –

ईर्ष्या त्यागो : कुदरत ने सभी को अलग-अलग रंग-रूप, आकार और सौंदर्य दिया है, कई बार किसी की कद-काठी, रंग-रूप या लहराते बालों को देखकर या अन्य कारणों से आपको ईर्ष्या होती होगी, लेकिन ईर्ष्या करने से कुछ हासिल नहीं होता, उल्टा आप जो हैं, उस पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हमेशा अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाए रखे, क्योंकि खूबसूरती अंदर से आती है अनंतकाल तक रहती है।

क्रोध से बचे : आप कितनी भी सुंदर है, पर यदि छोटी-छोटी बातों पर आप क्रोध करती हैं तो इससे अच्छा-खासा सौंदर्य भी बहुत जल्दी जाने लगता है। इसलिए क्रोध पर संयम रखें और अपनी त्वचा को बेनूर होने से बचाए, ताकि आप जितनी खूबसूरत है, उतनी ही हमेशा बनी रहे।

हास्य और प्रेम भाव : हास्य और प्रेमभाव से ही चेहरे की रंगत, आँखों की चमक, गालों की लालिमा और दिल की धड़कन बढ़ जाती है। यदि इनका महत्व आपने समझ लिया तो आपकी खूबसूरती में आंतरिक और बाहरी रूप से वृद्धि होगी ही।

चिंता छोड़े : चिंता करने से आप अपनी सेहत और सौंदर्य दोनों को बरबाद करती हैं। हर किसी के जीवन में कई तरह की चिंताएँ होती हैं, लेकिन यह आप पर निर्भर करता है कि आप इन परिस्थितियों में खुद को और हालातों को कैसे संभालते हैं - चिंता आपकी क्षमताओं को कम कर सकती है।

खुश रहना सीखें : जीवन चक्र में उतार-चढ़ाव, सुख-दुख आते रहते हैं। किसी एक ही बात को लेकर उसकी सोच में डूबे रहने से वह आपको जीवन के प्रति हताश कर देगा। यदि मन शांत हो तो इसका असर आपकी आत्मा से लेकर चेहरे तक पड़ता है।

इम्यूनिटी बूस्टर्स होते हैं मीठे दोस्त

अच्छा दोस्त वही है जो अपने दोस्त के गमों को आधा और खुशियों को दोगुना कर दे। दोस्ती का रिश्ता बहुत ही प्यारा और खूबसूरत होता है। सच्चे दोस्त आपको भीड़ में अकेला नहीं छोड़ते, वे आपका सहारा बन जाते हैं। भले ही परिस्थितियाँ कैसी भी हो, वो आपका साथ किसी भी हालत में या किसी लोजिक की ओट लेकर नहीं छोड़ता। ऐसा समय आ सकता है कि आपके घर वाले आपको गलत ठहराने लगें, आपसे दूरी बढ़ा ले, मगर सच्चा दोस्त ऐसा कभी नहीं करता। सच्चा दोस्त आपको गहराई से समझता है। अच्छा दोस्त हमारा सबसे बड़ा बैंक बैलेन्स है, उसके साथ हम अपना बड़े से बड़े दर्द भी भूल जाते हैं और अपनी किस्मत पर नाज़ करते हैं। वक्त कितना ही खराब हो, सच्चा दोस्त किसी ना किसी तरह पक्की मदद करने कहीं भी पहुँच ही जाता है। दोस्ती एक अनमोल खज़ाना है। अगर हमारे दोस्त नहीं हैं तो हम गरीब हैं। दोस्त सिर्फ भावनात्मक सहारा भर नहीं होते। हमारे अच्छे और सच्चे दोस्त हमें हर कदम पर मालामाल करते हैं। ये हमें कुछ नया करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमारे अंदर के डर को दूर करते हैं। अपने अच्छे अनुभव ही नहीं, हादसे भी साझा करते हैं ताकि हम उससे सबक भी ले सके। अच्छा दोस्त हमारी सोच को विस्तार देता है। वह कभी ईर्ष्या नहीं करता। बल्कि आपको आपकी खुशियों के साथ निखारता है। सच्चा दोस्त कठिनाइयों में हमारी मदद भी करते हैं, साथ ही हमें खुद उन कठिनाइयों से निकलना सिखाता है। सच्चे दोस्तों के साथ हम घर-परिवार के साथ-साथ कार्यालय की समस्याओं पर भी चर्चा कर सकते हैं।

सवाल है ऐसे सच्चे दोस्त मिलते कहाँ हैं ? आखिर कहाँ और कब बनते हैं ? पर ऐसा नहीं है। सच्चे और अच्छे दोस्त हमें जीवन के किसी भी मोड़ पर मिल सकते हैं। उन स्थानों पर दोस्तों की तलाश करें जहाँ आपकी रुचियां आपको ले जाती हैं।

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2020

राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज़ादी के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किए जाने से हमारे संवैधानिक व प्रशासनिक उत्तरदायित्व बढ़ गए। इस दिवस की स्मृति में भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

कोविड़-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों, मानक प्रचालन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), केरल, तिरुवनंतपुरम के कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2020 ऑनलाइन तरीके से आयोजित किया गया।

हिंदी दिवस, 2020 के अवसर पर भारत के आदरणीय गृह मंत्री जी द्वारा जारी संदेश एवं हिंदी भाषा में कुछ प्रमुख सूक्तियों के पोस्टर, सूचना पट्ट एवं कार्यालय परिसर के प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए।

प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2020 के सिलसिले में ऑनलाइन तरीके से निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई –

(1) निबंध लेखन
(2) कथा रचना
(3) कविता रचना
(4) टिप्पण एवं आलेखन

प्रतियोगिताओं के निम्नलिखित विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	स्थान
I	**निबंध लेखन**	
1.	श्री रोज़ अली, डेटा एंट्री ऑपरेटर 'ए'	**प्रथम**
2.	श्रीमती लक्ष्मी दास, वरिष्ठ लेखाकार	**द्वितीय**
3.	श्रीमती शांति के, सहायक लेखा अधिकारी	**तृतीय**
II	**कथा रचना**	
1.	श्रीमती शांति के, सहायक लेखा अधिकारी	**प्रथम**
2.	श्री रोज़ अली, डेटा एंट्री ऑपरेटर 'ए'	**द्वितीय**
3.	श्रीमती उषा बेरटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	**तृतीय**
III	**कविता रचना**	
1.	श्रीमती राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी	**प्रथम**
2.	श्रीमती सुशीला पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	**द्वितीय**
3.	श्रीमती उषा बेरटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	**तृतीय**
IV	**टिप्पण एवं आलेखन**	
1.	श्रीमती सुशीला पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	**प्रथम**
2.	श्री एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी	**द्वितीय**

हिंदी में प्रथम रचना, कवि आदि

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

हिंदी के प्रथम कवि हिंदी में दोहा चौपाई के प्रथम प्रयोग करने वाले **सरहपा** **(8 वीं शताब्दी, सिद्धों में प्रमुख नाम)** 	खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि **अमीर खुसरो** **(इनकी पहेलियाँ प्रसिद्ध है)** 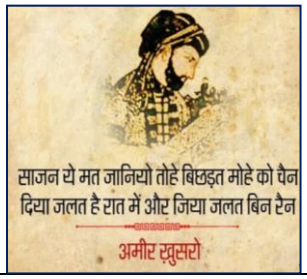
हिंदी खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना : **चंद छंद बरनन की महिमा** **(गंग कवि द्वारा लिखा गया)** 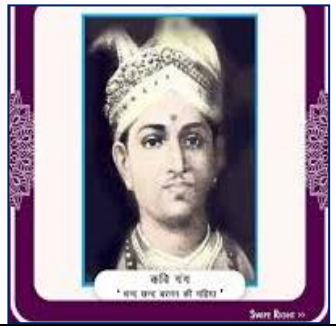	खड़ी बोली हिंदी में लिखा गया प्रथम महाकाव्य **प्रियप्रवास** **(अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध")** 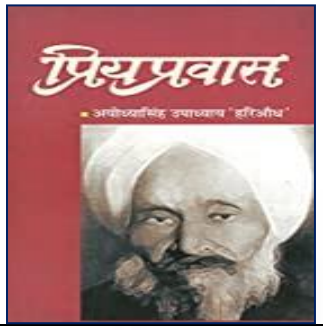
हिंदी की प्रथम रचना **श्रावकाचार (देवसेन द्वारा रचित)**	हिंदी की प्रथम मौलिक नाटक **नहुष (गोपालचंद)**
हिंदी की प्रथम जीवनी **दयानंत दिग्विजय (गोपाल शर्मा)**	हिंदी का प्रथम रिपोर्ताज **लक्ष्मी पुरा (शिवदान सिंह चौहान)**

हिंदी काव्य शास्त्र की प्रथम पुस्तक **साहित्य लहरी (सूरदास)** 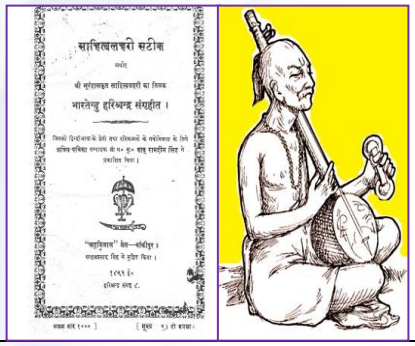 	हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी **इंदुमती (किशोरी लाल गोस्वामी)** 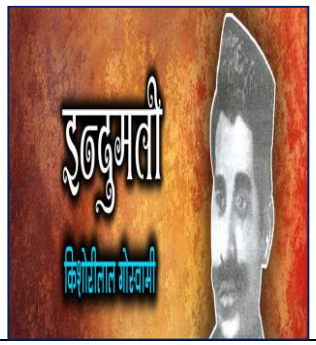
हिंदी की प्रथम एकांकी **एक घूँट (जयशंकर प्रसाद)** 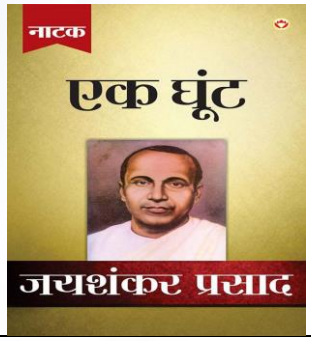 	हिंदी का प्रथम उपन्यास **परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवास दास)** 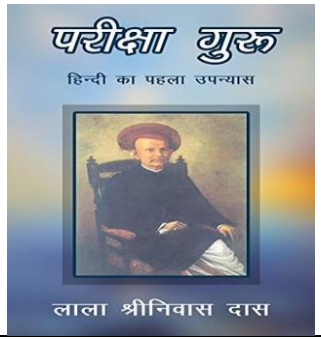
हिंदी की प्रथम आत्मकथा **अर्ध कथानक (बनारसी दास जैन)** 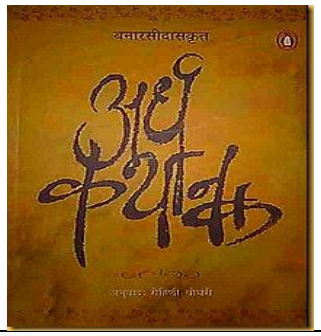 	हिंदी का प्रथम महाकाव्य **पृथ्वीराज रासौ (चंदबरदाई)** 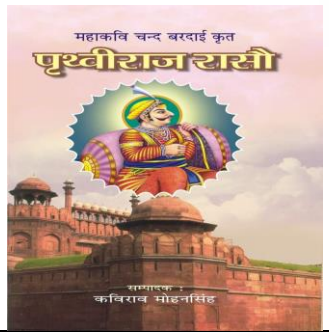
हिंदी का प्रथम गीतिकाव्य **करुणालय(जयशंकर प्रसाद)** 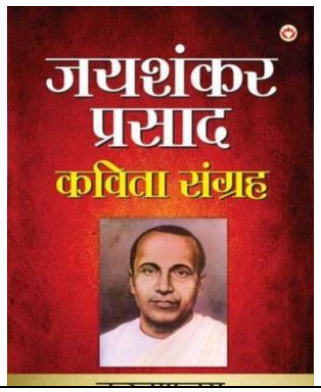 	हिंदी का प्रथम साहित्यिक पत्र **उदन्त मार्त्तण्ड** 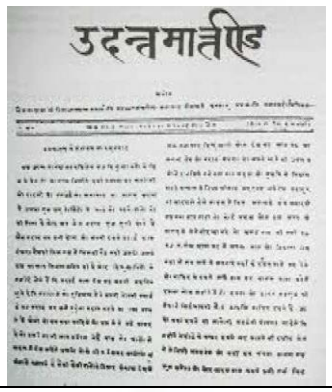

प्रथम सूफी प्रेमाख्यान का काव्य **चंदायन (मुल्ला दाऊद)** 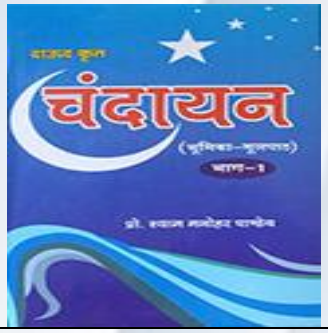	हिंदी का प्रथम दैनिक पत्र **समाचार सुधावर्षण**
खड़ी बोली हिंदी का प्रथम काव्य ग्रंथ **एकांतवासी योगी (श्रीधर पाठक)** 	हिंदी के प्रथम गीत रचनाकार **विद्यापति** 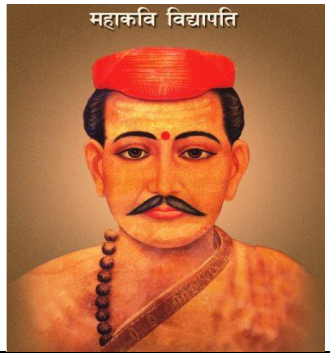
उर्दू -हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी साहित्य का सर्व प्रथम इतिहास ग्रंथ **"इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी"** **गार्सा द तासी (फ्रेंच विद्वान)** 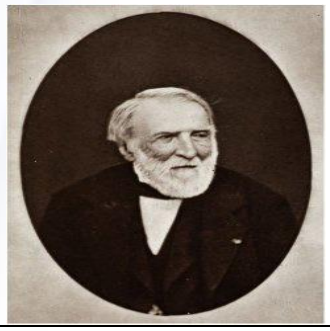	

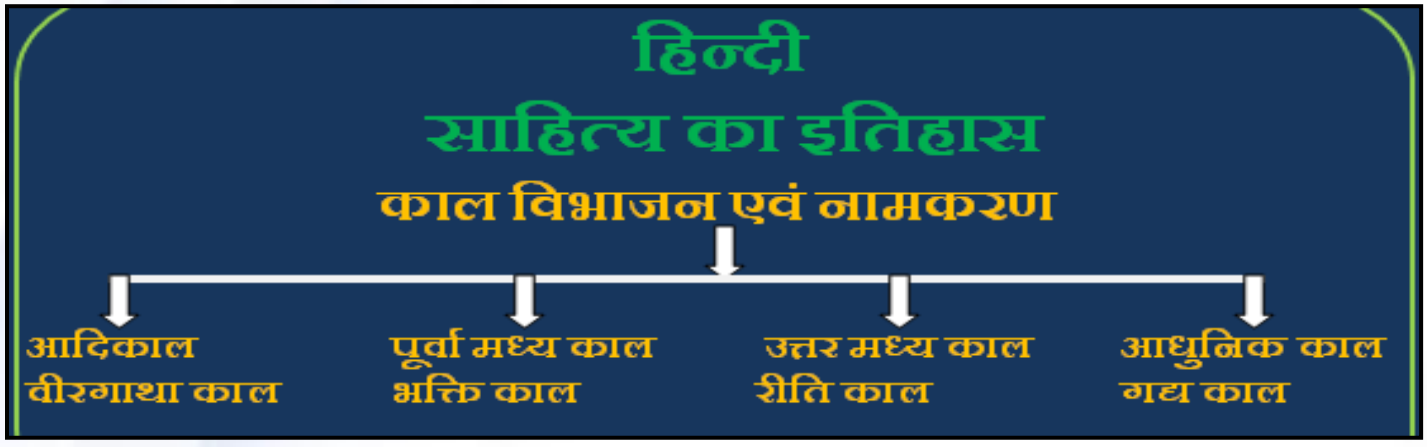

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

एस अपर्णा सरस्वति
सुपुत्री श्रीमती एल प्रभा
सहायक लेखा अधिकारी

अभिव्यक्त करने का हक किसी भी व्यक्ति के सर्व प्रधान मौलिक अधिकारों में से एक है। एक व्यक्ति अपने मन की बात, किसी के प्रति बिना जवाबदेह होते हुए खुलकर कह सकता है। इस अधिकार के बारे में सोचते ही हम में से ज्यादातर लोगों के मन में जोर्ज वाशिंगटन द्वारा बताया गया एक उद्धरण याद आता है जो इस प्रकार है "यदि बोलने की स्वतंत्रता हमसे छीन ली जाए तो शायद गूंगे और मौन हम उसी तरह संचालित किए जाएंगे जैसे भेड को बलि के लिए ले जाया जा रहा हो"। (If the freedom of speech is taken away then dumb and silent we may be led, like sheep to the slaughter) यह अधिकार भारत जैसे धर्म निरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए एक वरदान है।

हम इस सुंदर दुनिया के इतिहास की ओर ध्यान दे तो हम समझ पायेंगे कि इस अधिकार के लागू होने के पीछे एक रोचक कहानी है। एक जमाना ऐसा भी था जब लोगों का एक समूह पूरे विश्व पर राज कर रहा था और बाकी सबको गुलाम मानते थे। इसके खिलाफ क्रांति की पहली झलक मोन्टेन, रूसो और वाल्तेयर जैसे महान लेखकों की रचनाओं से उद्भव हुई। उनके कागज़ और स्याही ने यूरोप की आम जनता को इतना प्रभावित किया कि वहाँ फ्रेंच क्रांति शुरू हुई जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक अनिवार्य माँग थी। आज तक मरियान्ने का शिल्प, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्वभौमिक प्रतीक बनकर, सर उठाकर खड़ा है।

यदि हम समकालीन परिदृश्य को गौर से देखें तो हम समझ पायेंगे कि आधुनिक संसार के अधिकतर देशों ने इस अधिकार को अपने नागरिकों के लिए एक मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया है। यह लोगों को छुपाने के बजाय, सुनाने और समझाने का हक देता है या दिलाता है । फ्रेंच क्रांति के बहुत पहले ही यूनान के सोक्रटीस नाम के दार्शनिक ने एथन्स के लोगों को अपने मन की बात निडर होकर खुलकर बताने का अवसर देने हेतु एक क्रांति का आह्वान किया था। अपने आदर्शों के लिए उन्हें अपना प्राण त्यागना पड़ा। उनके प्राण संकट में होने के बावजूद भी वे अपने विचारों पर अटल रहे ताकि उनकी ये झलक एक नवीन युग की रचना कर सके जहाँ सभी लोग अपने मन की बात कहने के लिए स्वतंत्र हो।

अगर यह अधिकार भारत में नहीं होता तो आज सब कुछ अलग रहता। वैयक्तिक विचारों को दबाने वाला देश एक ही मार्ग पर चल सकता है और वह है भयंकर दमनकारी मार्ग। और सफर तब तक चलेगा जब तक वे डर का स्त्रोत बनेंगे और सारे नागरिक भयभीत होकर जीना शुरू करेंगे। इस अधिकार के बिना प्रेस और मीडिया का कोई आधार ही नहीं रहता। इस प्रकार अभिव्यक्ति का अधिकार एक राष्ट्र के वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जैसा कि कहा जाता है, एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी अवगुण दिखाई देगा, अगर उसका उपयोग समझदारी से नहीं किया गया तो। इन दिनों बहुत सारी ऐसी घटनाएँ हो रही हैं, जहाँ इस हक को पर्याप्त मात्रा में नहीं समझने के कारण उसका दुरुपयोग हो रहा है। जैसे जिम सी हैन्स ने कहा, "अगर आप मूर्खतापूर्वक बात करेंगे तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आपको उसके कुपरिणामों से नहीं बचा सकता।" संसार में अस्थिरता और असुरक्षा फैलानेवाले बहुत सारे हादसे हो चुके हैं। दुरुपयोग होता है तो, यह शस्त्र जितना दिखता है उससे कहीं गुना अधिक खतरनाक साबित हो सकता है।

भारत जैसा देश जहाँ शांति, उसकी अनेकता में एकता के एक संतुलन से आती है, वहाँ एक की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और दूसरे की एकांतता और बंधुत्व के बीच एक रेखा खींचना या सीमा बनाना अनिवार्य है। यदि यह व्यवस्था खराब हो जाए तो हमारे पूर्वजों द्वारा पालित यह सुंदर संतुलन का सार बिखर जायेगा। इसके परिणामस्वरूप अनेक धार्मिक उग्रवाद उभर कर आ सकते हैं, उसके साथ ही भेद्यता का एक मौका दूसरे देशों के सामने खुल जाता है जिसका गलत इस्तेमाल वे देशद्रोही कार्यों में कर सकते हैं।

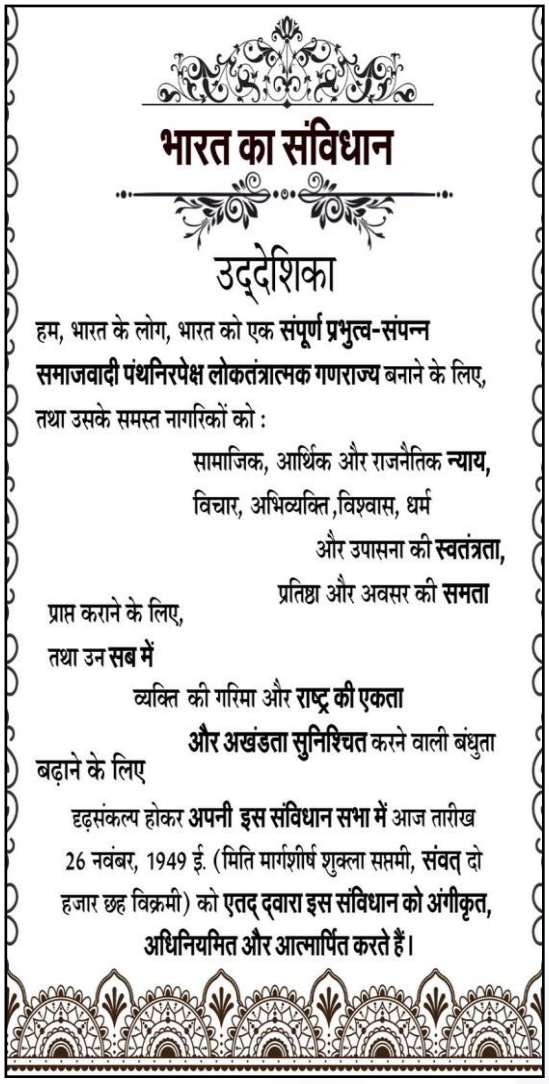

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और **राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित** करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, **संवत्** दो हजार छह विक्रमी) को **एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

यह कहकर समाप्त कर सकते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सबसे मुख्य और मौलिक अधिकारों में से एक है जिसका उपयोग सोच समझ कर किया जाना चाहिए। यह समय के इम्तहान पर अनुग्रह और लालित्य के साथ उतरा एक हक है, इसलिए इसकी सीमाओं का सम्मान करके इसके नाज़ुक और सुंदर पड़ाव को सुरक्षित रखना हर नागरिक का कर्तव्य है।

सुविचार.....

एल प्रभा
सहायक लेखा अधिकारी

आप आज जो करते हैं, उस पर भविष्य निर्भर करता है – महात्मा गाँधी

जन्म, व्याधि, जरा और मृत्यु ये तो केवल आनुषंगिक है, जीवन में यह अनिवार्य है, इसलिए एक स्वाभाविक घटना है – स्वामी विवेकानंद

लगातार पवित्र विचार करते रहें। बुरे संस्कारों को दबाने केलिए एक मात्र समाधान यही है - स्वामी विवेकानंद

करोड़ मुहरे खर्च करने से भी आयु का एक पल भी नहीं मिल सकता – शंकराचार्य

शांति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है - मदर थेरेसा

ऐसी कोई मंजिल नहीं जहाँ तक पहुँचने का कोई रास्ता न हो – डॉ ए पी जे अब्दुलकलाम

सत्य बोलने केलिए तैयारी नहीं करनी पड़ती, सत्य हमेशा दिल से निकलता है - स्वामी विवेकानंद

शिक्षा की जड़ कड़वी है पर उसके फल मीठे हैं – अरस्तु

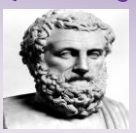

सोच समझकर ही नाराज़ हुआ करे अपनों से, आजकल मनाने का रिवाज़ खत्म हो गया है – गुलज़ार

अकेले चलना सीख लो, ज़रूरी नहीं जो आज तुम्हारे साथ है वो कल भी तुम्हारे साथ रहे - डॉ ए पी जे अब्दुलकलाम

ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरनेवाले हो। ऐसे सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीनेवाले हो – महात्मा गाँधी

यह दुनिया कठिनाईयों से भरी है, जिसे खुद पर भरोसा होता है, वहीं विजेता कहलाता है- गुरु नानक जी

आपकी प्रतिक्रिया .....

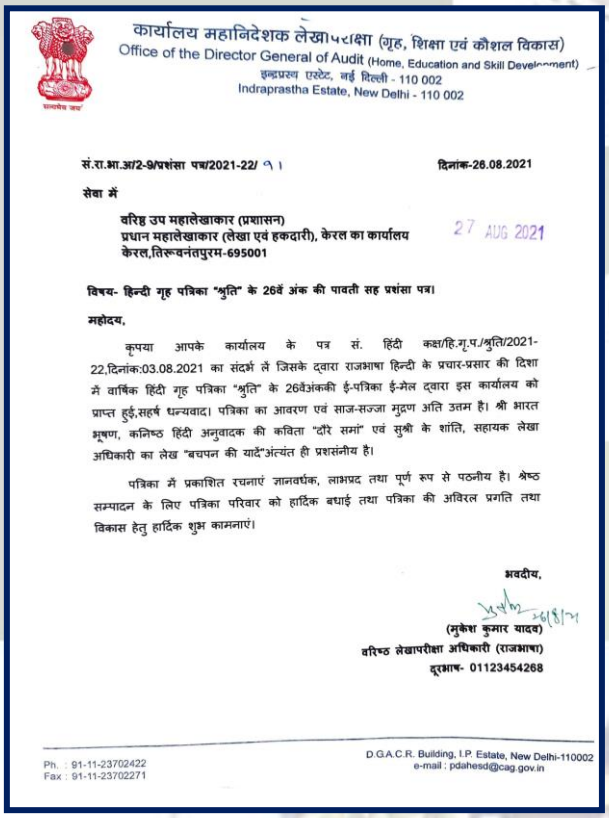

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
Office of the Director General of Audit (Home, Education and Skill Development)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2021-22/ ९१ दिनांक-26.08.2021

सेवा में

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय
केरल,तिरूवनंतपुरम-695001

27 AUG 2021

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र।

महोदय,

कृपया आपके कार्यालय के पत्र सं. हिंदी कक्ष/हि.गृ.प./श्रुति/2021-22,दिनांक:03.08.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26वेंअंककी ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई,सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री भारत भूषण, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की कविता "दौरे समां" एवं सुश्री के शांति, सहायक लेखा अधिकारी का लेख "बचपन की यादें"अत्यंत ही प्रशसंनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

भवदीय,

(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271

D.G.A.C.R. Building, I.P. Estate, New Delhi-110002
e-mail : pdahesd@cag.gov.in

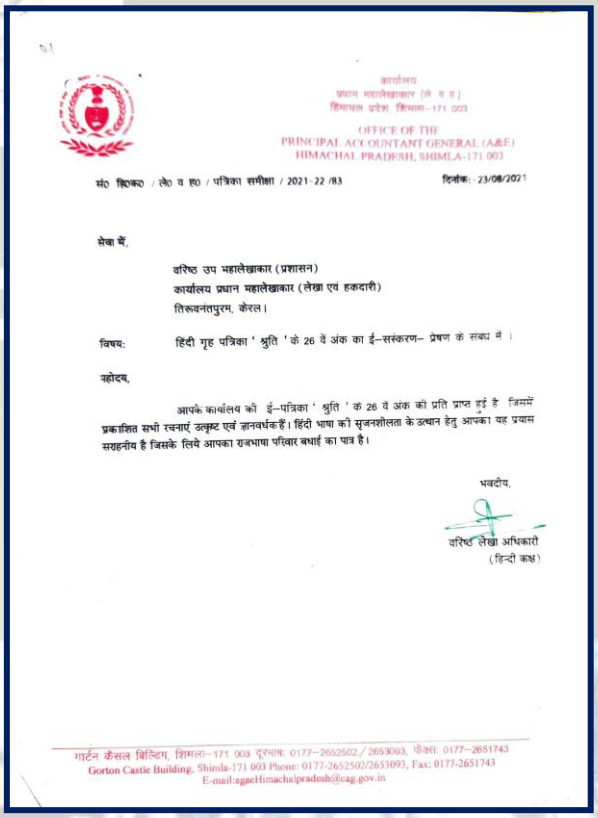

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले व ह)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हिप्रक० / ले० व ह० / पत्रिका समीक्षा / 2021-22 /83 दिनांक: 23/08/2021

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
तिरूवनंतपुरम, केरल।

विषय: हिंदी गृह पत्रिका ' श्रुति ' के 26 वें अंक का ई–संस्करण– प्रेषण के संबध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई–पत्रिका ' श्रुति ' के 26 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धकहैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2653093, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2653093, Fax: 0177-2651743
E-mail:agacHimachalpradesh@cag.gov.in

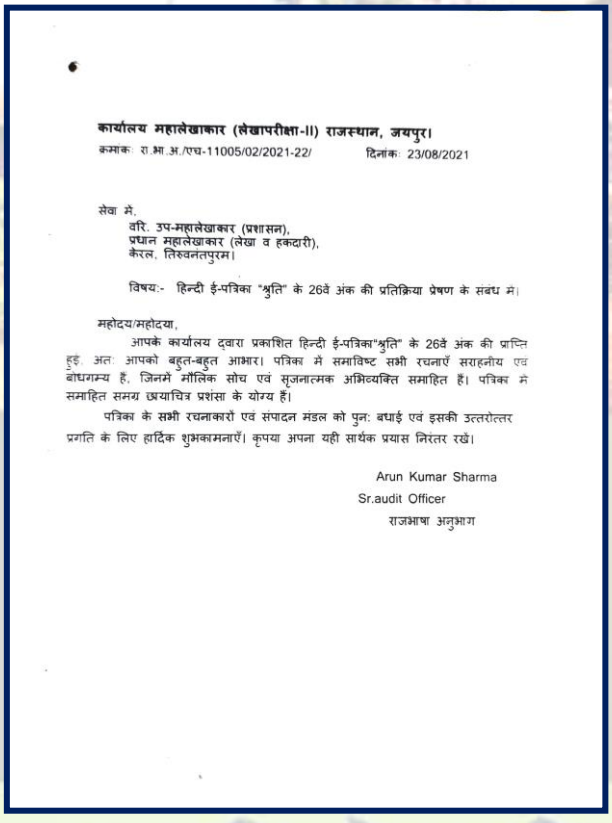

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर।
क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2021-22/ दिनांक: 23/08/2021

सेवा मे,
वरि. उप-महालेखाकार (प्रशासन),
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
केरल, तिरुवनंतपुरम।

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका"श्रुति" के 26वें अंक की प्राप्ति हुई, अत: आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सराहनीय एवं बोधगम्य हैं, जिनमें मौलिक सोच एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति समाहित हैं। पत्रिका में समाहित समग्र छायाचित्र प्रशंसा के योग्य हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को पुन: बधाई एवं इसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

Arun Kumar Sharma
Sr.audit Officer
राजभाषा अनुभाग

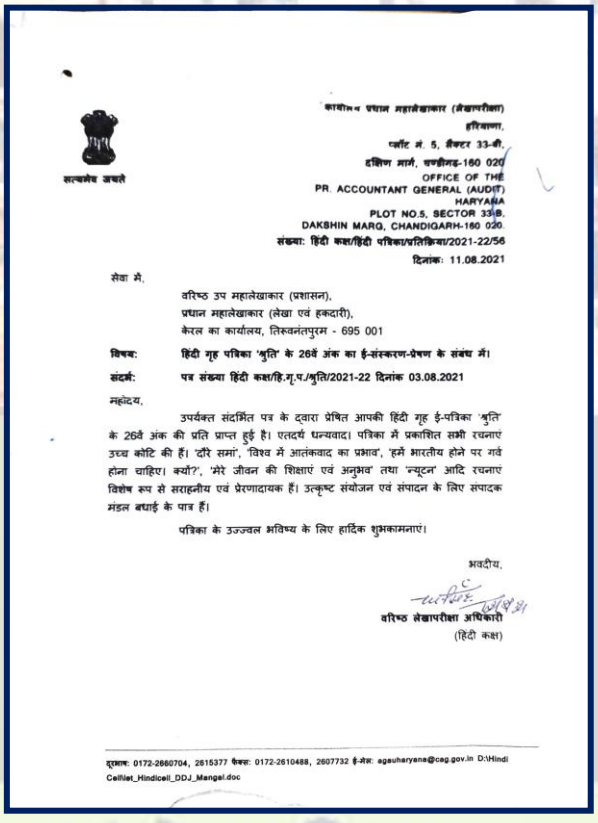

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA,
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/56
दिनांक: 11.08.2021

सेवा मे,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम - 695 001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक का ई-संस्करण-प्रेषण के संबंध में।

संदर्भ: पत्र संख्या हिंदी कक्ष/हि.गृ.प./श्रुति/2021-22 दिनांक 03.08.2021

महोदय,

उपर्यक्त संदर्भित पत्र के द्वारा प्रेषित आपकी हिंदी गृह ई-पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। 'दौरे समां', 'विश्व में आतंकवाद का प्रभाव', 'हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। क्यों?', 'मेरे जीवन की शिक्षाएं एवं अनुभव' तथा 'न्यूटन' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi Cell\let_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

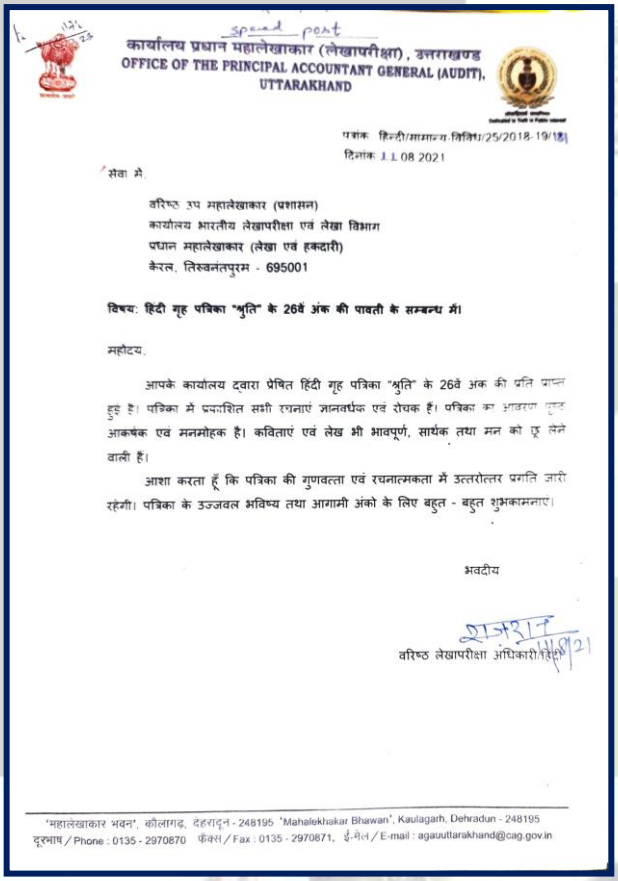

Speed post

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/18

दिनांक 11.08.2021

सेवा मे,

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं मनमोहक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंको के लिए बहुत - बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

---

संख्या/No. हि०क०/लेखा/प०/पत्रिका/20/21-22/158

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date 16/08/2021

सेवा मे,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)

प्रधान महालेखाकार(लेखा व हकदारी),केरल का कार्यालय

तिरुवनंतपुरम,केरल-695001

विषय- हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26 वें अंक के ई-संस्करण का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26 वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई।सहर्ष बधाई एवं धन्यवाद ।पत्रिका के इस अंक में उपयोगी पठनीय रचनाओं को संकलित किया गया है।पत्रिका का आवरण पृष्ठ केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में स्थित ऐतिहासिक नेपियर संग्रहालय पर केंद्रित है,जो दक्षिण भारत का उत्कृष्ट कला संग्रहालय है।इस अंक में 'महात्मा गांधी की नज़र में हिंदी'शीर्षक रचना के माध्यम सेहिंदी भाषा के महत्व से सम्बंधित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त "हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए,क्यों?" और "खुल रहे हैं नींद के सीक्रेट्स" शीर्षक रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं।

"श्रुति" के इस अंक में दक्षिण भारत के मशहूर त्योहार ओणम के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां भी चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं ,जो हमारे देश की बहुरंगी संस्कृति का सशक्त परिचायक है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अभियान को "श्रुति" पत्रिका ने अहिन्दी भाषी प्रदेश केरल में बहुत ही सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया है।पत्रिका भविष्य में निरन्तर अपने उद्देश्य में सफल हो,इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

भवदीय

16/08/2021

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी)

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स./Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in पो॰ बॉक्स/P.B.No.-47

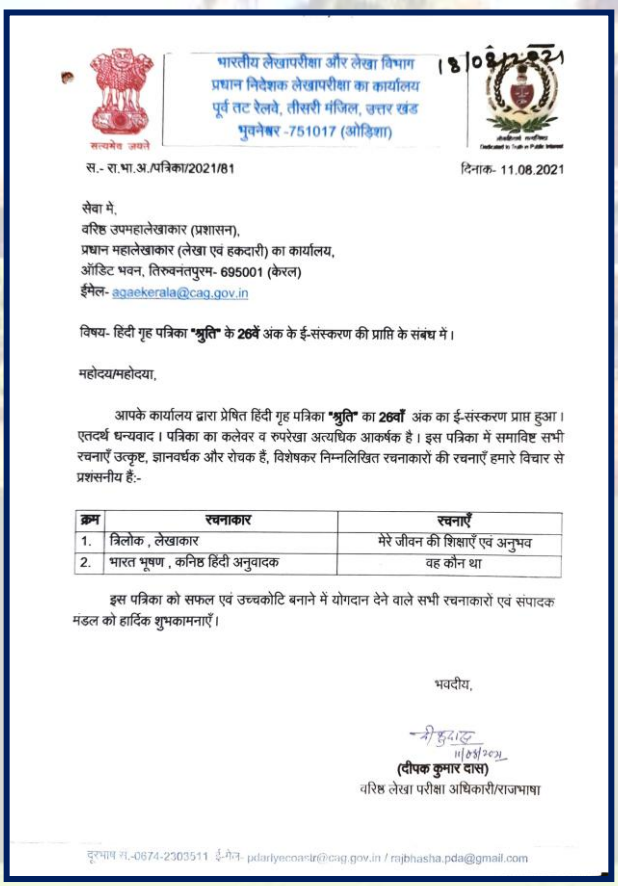

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

18/08/2021

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/81

दिनाक- 11.08.2021

सेवा मे,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
ऑडिट भवन, तिरुवनंतपुरम- 695001 (केरल)
ईमेल- agaekerala@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका **"श्रुति"** के **26वें** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **"श्रुति"** का **26वाँ** अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	त्रिलोक , लेखाकार	मेरे जीवन की शिक्षाएँ एवं अनुभव
2.	भारत भूषण , कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	वह कौन था

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

11/08/2021
(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष स.-0674-2303511 ई-मेल- pdaiyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

---

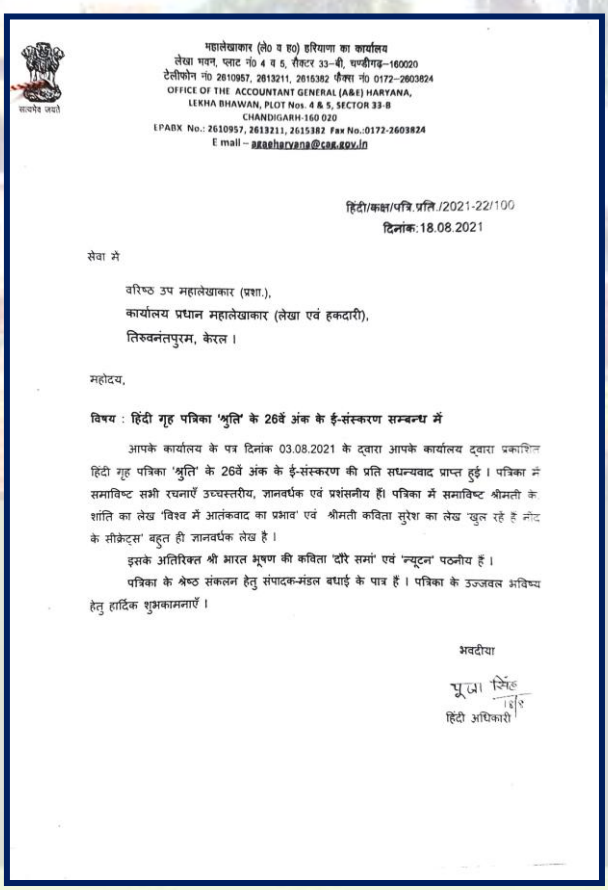

महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2021-22/100
दिनांक:18.08.2021

सेवा मे

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तिरुवनंतपुरम, केरल।

महोदय,

विषय : हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक के ई-संस्करण सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 03.08.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक के ई-संस्करण की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती के. शांति का लेख 'विश्व में आतंकवाद का प्रभाव' एवं श्रीमती कविता सुरेश का लेख 'खुल रहे हैं नींद के सीक्रेट्स' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री भारत भूषण की कविता 'दौरे समां' एवं 'न्यूटन' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II, MAHARASHTRA, NAGPUR

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. 58
दिनांक:-13/08/2021

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
केरल, तिरुवनंतपुरम-695001
विषय : हिंदी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय हिंदी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री भारत भूषण, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की रचना 'दौरे समां', सुश्री के शांति, सहायक लेखा अधिकारी का लेख 'बचपन की यादें' तथा श्रीमती कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार का लेख 'खुल रहे हैं नींद के सीक्रेट्स' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपुर - 440001
दूरभाष / Telephone - 0712-2564506 To 2564510
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmaha.cag.gov.in

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा) - II महाराष्ट्र-मुंबई शाखा कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II MAHARASHTRA BRANCH OFFICE MUMBAI

दूरभाष सं./Tel No 022-22054022 / 022-22057360 फैक्स नं / Fax No 022-22092326
ई-मेल/E-mail agcommauMaharashtra@cag.gov.in

प्रशासन/सेप-III/हिन्दी पत्रिका/फा 576/ 1414 0 SEP 2021

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार /प्रशासन
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),केरल,तिरुवनंतपुरम का कार्यालय
तिरुवनंतपुरम-695001

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से हिन्दी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। नेपियर संग्रहालय के चित्र से सुसज्जित पत्रिका का मुख पृष्ठ मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे बचपन की यादें, वह कौन था,मेरे जीवन की शिक्षाएं एवं अनुभव तथा विश्व में आतंकवाद का प्रभाव लेख एवं दौरे समा,इंद्रधनुष तथा न्यूटन कवितायें अत्यंत प्रशंसनीय हैं। कार्यालय में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह ओणम,तथा हिंदी दिवस/पखवाड़ा की झलकियाँ अत्यंत मनमोहक हैं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,
(मेरी व्ही.अलेक्झांडर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रांक:26 / हि0प्र0 / 2021–22 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 148 दिनांक 09.09.2021

सेवा में,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल
तिरूवनंतपुरम – 695001

विषयः–हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" वर्ष 2019–20 के 26 वें अंक के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह हिन्दी पत्रिका "श्रुति" वर्ष 2019–20 का 26 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ विशेष रूप से श्रीमती के0 शांति (सहायक लेखाधिकारी) की "विश्व में आंतकवाद का प्रभाव", श्रीमती कविता सुरेश (वरि0 लेखाकार) की "खुल रहे हैं नीदं के सीक्रेटस", श्री त्रिलोक (लेखाकार) की "मेरे जीवन की शिक्षाएं एवं अनुभव", श्री भारत भूषण (कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक) की "वह कौन था" आदि ज्ञानवर्धक व सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिंदी प्रकोष्ठ

"महालेखाकार भवन",कौलागढ़, देहरादून–248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun: 248195
दूरभाश / Telephone: 0135 - 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 0135 - 2970859
Website: agua.cag.gov.in, Email: agaeuttarakhand@cag.gov.in

प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका जवाब/2021-22/47
दिनांक 06/09/2021

सेवा में,

वरि0 लेखा अधिकारी, हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह0),
केरल, तिरुवनंतपुरम-695001.

विषय :- हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक के ई-संस्करण का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 05/08/2021 के द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 26वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्रीमती कविता सुरेश का लेख 'खुल रहें है नींद के सीक्रेट्स', श्री रजनीकांत सिंहा की कविता 'इंद्रधनुष' एवं श्री भारत भूषण की कविता 'न्यूटन' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

01.04.2020 से 30.09.2020 तक सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	वेदवल्ली आर	वरिष्ठ उप महालेखाकार	31.05.2020
2.	राजू के टी	वरिष्ठ उप महालेखाकार	31.05.2020
3.	षीला के एम	पर्यवेक्षक	30.04.2020
4.	जोसफ पी पी	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
5.	अप्पूट्टि पी	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020
6.	अनिल चंद्रन सी	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
7.	अजिता कुमारी एस	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
8.	कुसुमराणी ए एम	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
9.	जोसफ एंटणी सी ए	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2020
10.	स्वर्णम ए	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2020
11.	जयरामन वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
12.	राधामणी के के	पर्यवेक्षक	31.05.2020
13.	बाबु कुमार के	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
14.	चाको के एम	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
15.	वासुदेवन पी आर	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	31.05.2020
16.	उण्णिकृष्णन पी एन	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
17.	सीसर के अब्रहाम	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
18.	गीता कुमारी टी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020

19.	वेणुगोपाल टी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
20.	लीला पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
21.	मंगलेश्वरी एन पी	पर्यवेक्षक	31.05.2020
22.	गीतादेवी जी एस	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2020
23.	कलालक्ष्मी एन	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
24.	चंद्रिका शिवदासन	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
25.	विश्वनाथन पी के	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
26.	सरसु पी जॉर्ज	पर्यवेक्षक	31.05.2020
27.	जॉणी वर्गीस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
28.	श्रीहर्षन के के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2020
29.	गिरिजा वी एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2020
30.	कृष्णन एम डी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020
31.	प्रेमा के पी	पर्यवेक्षक	31.05.2020
32.	रवींद्रन पी (सं.2)	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2020
33.	मालिनी सी वी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2020
34.	तेरेसा के आर	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
35.	विनोद कृष्णन पी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2020
36.	श्रीलाल के के	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2020
37.	अनिल कुमार एन	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
38.	एंटणि फ्लेमि मैथ्यु पी ए	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020
39.	विनोद जी एन	सहायक लेखा अधिकारी	30.09.2020

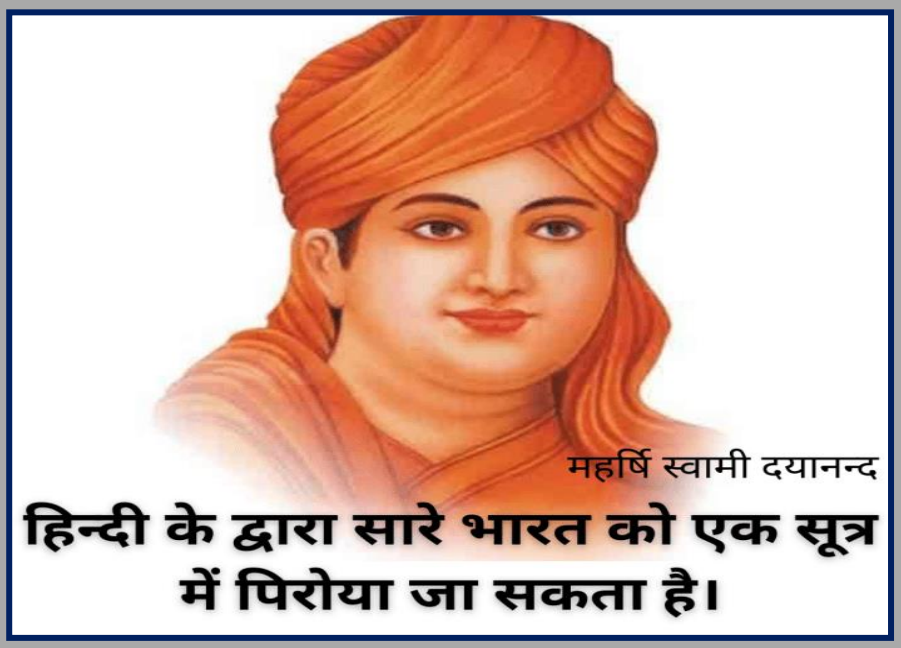
महर्षि स्वामी दयानन्द
हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

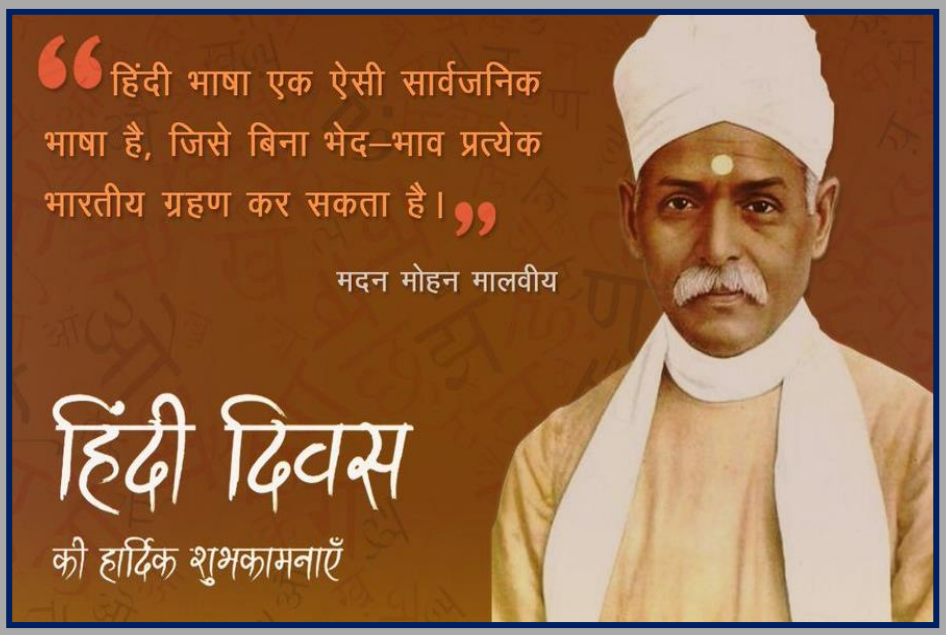
“हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।”
मदन मोहन मालवीय
हिंदी दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ

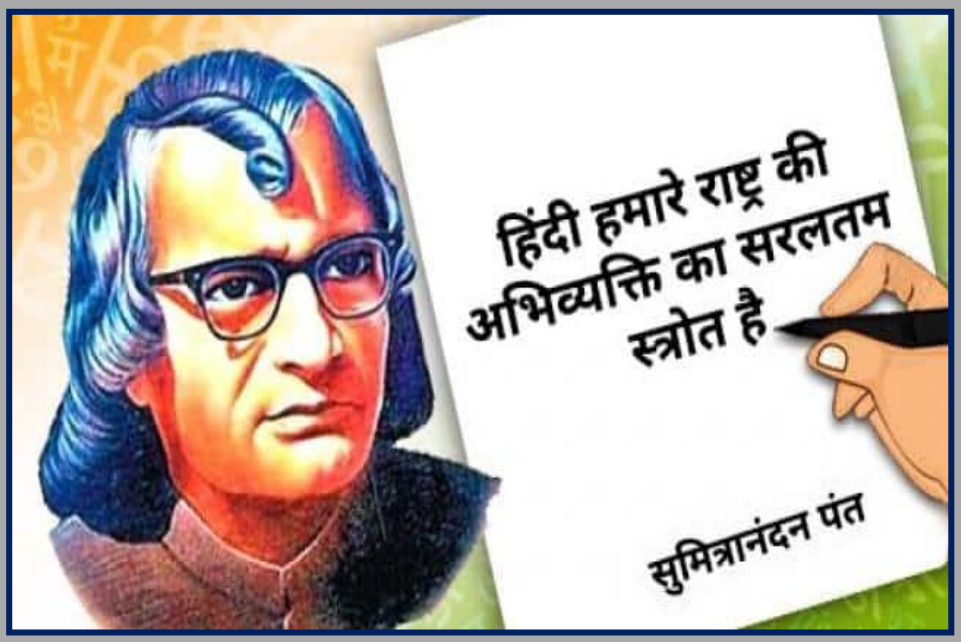
हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है
सुमित्रानंदन पंत

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल